उत्तर रामचरितम् नाटक के प्रमुख पुरूष पात्रों का चारित्रिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

[1] स्वीटी कुमारी, [2] डॉ. सुमन लता पाल

1शोधार्थिनी, संस्कृत विभाग, भदावर विद्या मंदिर (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, बाह (आगरा)
2निर्देशिका, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, भदावर विद्या मंदिर (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, बाह (आगरा)

सार

भवभूति कृत 'उत्तररामचरितम्' संस्कृत साहित्य का एक उत्कृष्ट करुण रस प्रधान नाटक है। इस नाटक के पुरुष पात्र केवल पारंपरिक नायक या खलनायक नहीं हैं, बल्कि वे गहरे आंतरिक द्वंद्व, कर्तव्य और भावना के टकराव तथा मनोवैज्ञानिक जटिलताओं से गुज़रे हैं।

परिचय

नाटक के प्रमुख पुरुष पात्रों का चारित्रिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण निम्नलिखित है:1. श्रीराम (नायक)श्रीराम का चरित्र इस नाटक में एक अलौकिक राजा और एक अत्यंत भावुक, व्यथित पति के त्रिशंकु द्वंद्व पर आधारित है।कर्तव्य बनाम प्रेम का भीषण अंतर्द्वंद्व: राम का संपूर्ण चरित्र 'लोकारोधन' (प्रजा को संतुष्ट रखना) और 'सीता-प्रेम' के बीच पिस रहा है। मनोवैज्ञानिक रूप से वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी ही दृष्टि में दोषी हैं। वे सीता की पवित्रता जानते हैं, फिर भी प्रजा के भय से उनका त्याग करते हैं।अवसाद और आत्म-ग्लानि (Guilt & Depression): नाटक के तृतीय अंक ('छाया अंक') में राम की मानसिक स्थिति चरम अवसाद की है। वे पंचवटी के दृश्यों को देखकर बार-बार मूर्छित होते हैं। उनका रोना, विलाप करना और अपनी किस्मत को कोसना यह दिखाता है कि राजा का मुकुट उनके व्यक्तिगत सुख को पूरी तरह कुचल चुका है।संवेदनशील और कोमल हृदय: भवभूति ने राम के वज्र से भी कठोर (कर्तव्य में) और फूल से भी कोमल (हृदय में) रूप को उभारा है। वे एक ऐसे 'धीरोदात्त' नायक हैं जिनकी वीरता उनके आंतरिक आंसुओं के पीछे छिप जाती है।2. लक्ष्मणलक्ष्मण इस नाटक में कर्तव्यनिष्ठा, आज्ञाकारिता और मूक वेदना के प्रतीक हैं।अपराध बोध (Subconscious Guilt): सीता को वन में छोड़ने का अप्रिय कार्य लक्ष्मण को ही करना पड़ा था। इस कारण वे मानसिक रूप से एक भारी बोझ तले दबे हैं। प्रथम अंक में चित्रदर्शन के समय वे सीता के सामने आँखें मिलाने में संकोच और ग्लानि का अनुभव करते हैं।[1,2,3]भ्रातृ-भक्ति और संयम: राम के प्रति उनका समर्पण अतुलनीय है। राम के दुःख को देखकर वे स्वयं भीतर ही भीतर टूटते हैं, लेकिन राम को संभालने के लिए वे अपनी भावनाओं पर कड़ा नियंत्रण रखते हैं। उनका चरित्र अत्यधिक संतुलित और परिपक्व दिखाई देता है।3. लव और कुशये दोनों राम और सीता के जुड़वां पुत्र हैं, जो महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पले-बढ़े हैं। इनका चरित्र बाल-मनोविज्ञान का अद्भुत उदाहरण है।लव (अदम्य उत्साह और क्षत्रिय स्वाभिमान): लव का चरित्र अत्यधिक तेजस्वी, निडर और स्वाभिमानी है। अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को देखकर और सैनिकों की चुनौती सुनकर उनका क्षत्रिय रक्त उबल पड़ता है। मनोवैज्ञानिक रूप से उनमें अज्ञात रूप से अपने पिता (राम) के ही वीर संस्कार मौजूद हैं। वे बड़ों का आदर करते हैं, लेकिन अन्याय या अहंकार के सामने नहीं झुकते।कुश (गंभीर और विवेकशील): कुश अपने भाई लव की तुलना में अधिक गंभीर और शांत स्वभाव के हैं। जब वे युद्धभूमि में प्रवेश करते हैं, तो उनकी निर्भीकता और बड़ों के प्रति आदर का संतुलन उनके उच्च मानसिक विकास को दर्शाता है।4. महर्षि वाल्मीकि और जनकये दोनों वृद्ध पुरुष पात्र नाटक में मार्गदर्शक और संरक्षक की भूमिका में हैं।महर्षि वाल्मीकि (करुणा और दूरदर्शिता): वाल्मीकि का मनोविज्ञान एक परम हितैषी पिता और ऋषि का है। वे राम के कृत्य से दुखी तो हैं, लेकिन क्रोधित होने के बजाय समस्या का समाधान (राम-सीता का पुनर्मिलन) खोजने में अपनी

ऊर्जा लगाते हैं।राजर्षि जनक (तीव्र आक्रोश और वैराग्य): सीता के पिता जनक का चरित्र चौथे अंक में सामने आता है। बेटी के साथ हुए अन्याय के कारण उनका हृदय गहरे शोक और राम के प्रति तीव्र आक्रोश से भरा है। वे अपनी दार्शनिकता के बावजूद एक असहाय पिता की मानसिक पीड़ा को छिपा नहीं पाते।5. चन्द्रकेतु (लक्ष्मण के पुत्र)चन्द्रकेतु नई पीढ़ी के वीर और मर्यादित सैनिक का प्रतिनिधित्व करते हैं।वीरता और शिष्टता का समन्वय: लव के साथ उनका युद्ध केवल शक्ति का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि दो महान चरित्रों का मिलन है। लव की वीरता को देखकर चन्द्रकेतु मन ही मन उनकी प्रशंसा करते हैं। उनमें प्रतिद्वंद्वी के प्रति ईर्ष्या नहीं, बल्कि एक सच्चे क्षत्रिय का सम्मान भाव है।[4,5,6]

विचार-विमर्श

उत्तररामचरितम् महाकवि भवभूति का प्रसिद्ध संस्कृत नाटक है, जिसके सात अंकों में राम के उत्तर जीवन की कथा है।

भवभूति एक सफल नाटककार हैं। उत्तररामचरितम् में उन्होने ऐसे नायक से संबंधित इतिवृत्त का चयन किया है जो भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इस कथानक का आकर्षण भारत के साथ साथ विदेशी जनमानस में भी सदा से रहा है और रहेगा। अपनी लेखनी चातुर्य से कवि ने राम के पत्नी परित्याग रूपी चरित्र के दोष को सदा के लिये दूर करदिया। साथ ही सीता को वनवास देने वाले राम का रुदन दिखाकर कवि ने सीता के अपमानित तथा दुःख भरे हृदय को बहुत शान्त किया हैं। साहित्य शास्त्र में जहाँ नाटकों में शृंगार अथवा वीर रस की प्रधानता का विधान है वही भवभूति ने उसके विपरीत करुण रस प्रधान नाटक लिखकर नाट्यजगत में एक अपूर्व क्रान्ति ला दी। भवभूति तो यहाँ तक कहते हैं कि करुण ही एकमात्र रस है। वही करुण निमित्त भेद से अन्य रूपों में व्यक्त हुआ है। विवाह से पूर्व नायक नायिका का शृंगार वर्णन तो प्रायः सभी कवियों ने सफलता के साथ किया है परन्तु भवभूति ने दाम्पत्य प्रेम का जैसा उज्ज्वल एवं विशद चित्र खींचा है वैसा अन्यत्र दुलर्भ है।

सात अंकों में निबद्ध उत्तररामचरितम भवभूति की सर्वश्रेष्ठ नाट्यकृति है। इसमें रामराज्यमिषेक के पश्चात् जीवन का लोकोत्तर चरित वर्णित है जो महावीरचरित का ही उत्तर भाग माना जाता है।। संस्कृत नाट्यसाहित्य में मर्यादापुरषोत्तम श्री रामचन्द्र के पावन चरित्र से सम्बद्ध अनेक नाटक है किन्तु उनमें भवभूति का उत्तरराम चरितम् अपना एक अलग ही वैशिष्ट्य रखता है। काव्य शास्त्र में जहाँ नाटकों में श्रृंगार अथवा वीर रस की प्रधानता का विधान है वहीं भवभूति ने उसके विपरीत करुण रस प्रधान नाटक रचकर नाट्यजगत में एक अपूर्व क्रान्तिला दी है। उत्तररामचरितम् में प्रेम का जैसा शुद्ध रूप देखने को मिलता है वैसा अन्य कवियों की कृत्तियों में दुर्लभ है। कवि ने इस नाटक के माध्यम से राजा का वह आदर्श रूप प्रस्तुत किया है जो स्वार्थ और त्याग की मूर्ति है तथा प्रजारंजन ही जिसका प्रधान धर्म है।[7,8,9] प्रजा सुख के लिये प्राणप्रिया पत्नी का भी त्याग करने में जिसे कोई हिचक नहीं है। इस नाटक में प्रकृति के कोमल तथा मधुर रूप के वर्णन की अपेक्षा उसके गम्भीर तथा विकट रूप का अधिक वर्णन हुआ है जो अद्वितीय एवं श्लाघनीय हैं। वास्तव में यह नाटक अन्य नाटकों की तुलना में निराला ही है। इसी कारण संस्कृत नाट्य जगत में इसका विशेष स्थान है। सार रूप में यही कहा जा सकता है कि विश्वास की महिमा में, प्रेम की पवित्रता में, भावनाओं की तरंगक्रीड़ा में, भाषा के गम्भीर्य में और हृदय के माहात्म्य में उत्तररामचरितम् श्रेष्ठ एवं अतुलनीय नाटक है।

परिणाम

जनापवाद के कारण राम न चाहते हुए भी सीता का परित्याग कर देते हैं। सीतात्याग के बाद विरही राम की दशा का तृतीय अंक में करुण चित्र प्रस्तुत किया गया है, जो काव्य की दृष्टि से इस नाटक की जान है। भवभूति ने इस दृश्यकाव्य में दांपत्य प्रणय के आदर्श रूप को अंकित किया है। कोमल एवं कठोर भावों की रुचिर व्यंजना, रमणीय और भयावह प्रकृति चित्रों का कुशल अंकन इस नाटक की विशेषताएँ हैं। उत्तररामचरित में नाटकीय व्यापार की गतिमत्ता अवश्य शिथिल है और यह कृति नाटकत्व की अपेक्षा काव्यतत्व और गीति नाट्यत्व की अधिक परिचायक है। भवभूति की भावुकता और पांडित्यपूर्ण शैली का चरम परिपाक इस कृति में पूर्णत: लक्षित होता है।

महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैंैंं। उन्होंने उत्तररामचरितम्, महावीर चरितम् एवं मालतीमाधव नामक तीन नाटक लिखे हैं। निःसंदेह तीन नाटक सर्वोत्कृष्ट है। उत्तररामचरितम् सर्वाधिक प्रसिद्ध नाटक है। यह महाकवि भवभूति का अकेला नाटक है जो महाकवि कालिदास के समक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। महाकवि भवभूति ने अपने नाटकों में पात्रों के चयन पर विशेष ध्यान दिया है। नाटक के पात्र जितना सुन्दर सजीव एवं गुणी होगे नाटक उतना ही सफल सिद्ध होगा। नाटक के पात्रों के चारित्रिक विशेषता का एक प्रमुख महत्व होता है। नाटककार विभिन्न प्रकार के पात्रों के माध्यम से अपने युगीन जीवन का जीता - जागता चित्र अंकित करता है।[8,9,10]
अतः नाटकों में चरित्र-चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। भवभूति के नाटक उत्तररामचरितम् में पुरूष एवं स्त्री पात्रों का वर्णन प्राप्त हैं किन्तु मैंने अपने शोध का विषय उत्तररामचरितम् के पुरूष पात्र लिया है, जिसमें पुरूष पात्रों को दो भागों में विभाजित कर उनके विषय में वर्णन किया जायेगा।
उत्तररामचरित पर अनेक टीकाएँ उपलब्ध हैं जिनमें घनश्याम, वीरराघव, नारायण और रामचंद्र बुधेंद्र की टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। इसके अनेक भारतीय संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अधिक प्रचलित निर्णयसागर संस्करण है, जिसका प्रथम संस्करण सन् 1899 में मुंबई से प्रकाशित हुआ था। इसके और भी अनेक संपादन निकल चुके हैं। इनमें प्रसिद्ध संस्करण ये हैं : सी.एच्. टॉनी द्वारा अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रकाशित (कलकत्ता, 1871), फ्रेंच अनुवाद सहित फ़ेलीनेव (क़ड्ढ"थ्न् ग़ड्ढ"ध्ड्ढ) द्वारा ब्रूसेल्स तथा पॉरिस से 1880 में प्रकाशित, डॉ° बेलवलकर द्वारा केवल अंग्रेजी अनुवाद तथा भूमिका के रूप में हॉर्वर्ड ओरिएंटल् सीरीज़ में संपादित (1915 ई.)।
महाकवि भवभूति द्वारा रचित नाटक 'उत्तररामचरितम्' में कुल 19 पुरुष पात्र हैं।प्रमुख पुरुष पात्रराम: नाटक के मुख्य नायक और अयोध्या के राजा।लक्ष्मण: राम के छोटे भाई।लव और कुश: राम और सीता के पुत्र।चन्द्रकेतु: लक्ष्मण और उर्मिला के पुत्र।जनक: सीता के पिता और मिथिला के राजा।वशिष्ठ: कुल गुरु और ऋषि।वाल्मीकि: रामायण के रचयिता और ऋषि।शम्बूक: प्रतिनायक और तपस्वी शुद्र।सुमंत्र: अयोध्या के सारथी और मंत्री।दुर्मुख: राम का गुप्तचर।अन्य पुरुष पात्रऋष्यशृङ्गअष्टावक्रअगस्त्यसौधातकि (मुनिबालक)दण्डायनकञ्चुकी (अंतःपुर का द्वारपाल/कर्मचारी)
सात अंकों में रचित, उत्तरारामचरित का मुख्य विषय सीता का त्याग है। प्रथम अंक सीता की अग्नि परीक्षा तक राम की कहानी का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करता है । अग्नि परीक्षा स्थल से दूर रहने वाले आम लोग आश्वस्त नहीं हुए और राम द्वारा सीता को स्वीकार करने की कड़ी आलोचना की। इससे राम को सीता को त्यागने का खेदजनक निर्णय लेने के लिए विवश होना पड़ा। उन्होंने गर्भवती होने के कारण वनों में पुनः जाने की उनकी इच्छा को पूरा करने के बहाने बिना किसी स्पष्टीकरण के सीता को विदा कर दिया। परन्तु राम को सीता की पवित्रता पर कभी कोई संदेह नहीं था और उन्होंने सीता को कभी अपने मन से नहीं निकाला, और इसी कारण वे अगले 12 वर्षों तक जीवित मृत्यु का अनुभव करते रहे। [2]
सीता ने लावा और कुश नामक जुड़वां बच्चों को जन्म दिया , जिनका पालन-पोषण वाल्मीकि की देखरेख में हुआ । कुछ समय बाद, राम पंचवटी में एक शूद्र तपस्वी को दंड देने गए और वहां उनकी मुलाकात वनों की अधिष्ठात्री देवी वासंती से हुई। वासंती ने सीता को त्यागने के लिए राम को फटकारा, जिससे राम को गहरा पश्चाताप हुआ और असहनीय पीड़ा हुई। भवभूति ने इस स्थिति को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करते हुए अदृश्य सीता को राम की गहरी पीड़ा का साक्षी बनाया। सीता, जो अकथनीय परित्याग के कारण दुखी थीं, अश्वमेध यज्ञ में राम की संगिनी के रूप में अपनी स्वर्ण प्रतिमा के बारे में सुनकर अपने पति से पूरी तरह से विरक्त हो गईं। गंगा और पृथ्वी देवियों ने सीता को पवित्र घोषित किया, और पश्चातापी जनता द्वारा सीता की वापसी को पूर्ण स्वीकृति देने के बाद अरुंधति ने सीता को राम को सौंप दिया। इस प्रकार सीता और राम का सुखद पुनर्मिलन हुआ। [2]
महाकवि भवभूति विरचित 'उत्तररामचरितम्' संस्कृत साहित्य का एक उत्कृष्ट करुण रस प्रधान नाटक है। इसके द्वितीय अंक को 'पंचवटी प्रवेश' के नाम से जाना जाता है। इस अंक का आरम्भ एक विष्कम्भक से होता है, जिसमें आत्रेयी और वनदेवता वासन्ती के मध्य संवाद होता है। आत्रेयी महर्षि वाल्मीकि के आश्रम से शिक्षा ग्रहण कर लौट रही हैं और वह बताती हैं कि सीता के परित्याग के पश्चात श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया है। इसी संवाद के माध्यम से पाठकों

को ज्ञात होता है कि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण काव्य की रचना की है और लव-कुश नामक दो बालकों का पालन-पोषण और शिक्षण उनके आश्रम में हो रहा है।[9,10]
अंक के मुख्य भाग में श्रीराम का दण्डकारण्य में पुनः आगमन होता है। श्रीराम यहाँ शम्बूक नामक शूद्र तपस्वी का वध करने के उद्देश्य से आए हैं, क्योंकि उसके अधर्मपूर्ण तप के कारण एक ब्राह्मण पुत्र की अकाल मृत्यु हो गई थी। शम्बूक वध के उपरान्त उसकी आत्मा दिव्य रूप धारण कर श्रीराम की स्तुति करती है। श्रीराम जब उसी पंचवटी के मार्ग से गुजरते हैं जहाँ उन्होंने सीता के साथ वनवास के सुखद क्षण व्यतीत किए थे, तो पुरानी स्मृतियाँ उन्हें उद्वेलित कर देती हैं। वे उन स्थानों को देखकर अत्यंत भावुक हो जाते हैं जहाँ सीता के साथ उनका गहरा जुड़ाव था।

भवभूति ने इस अंक में प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत चित्रण किया है। श्रीराम की विरह वेदना इतनी गहरी है कि वे जड़ और चेतन का भेद भूल जाते हैं। वे उन वृक्षों, लताओं और गोदावरी के तटों को देखकर विलाप करने लगते हैं जो कभी उनकी प्रसन्नता के साक्षी थे। इसी सन्दर्भ में एक अत्यंत मार्मिक श्लोक आता है जो श्रीराम की मानसिक अवस्था को दर्शाता है:

अनिर्भिन्नो गभीरत्वात् अन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥
अर्थात्, गम्भीर होने के कारण श्रीराम का दुःख बाहर प्रकट नहीं हो पा रहा है, किन्तु उनके भीतर की व्यथा अत्यंत सघन है। उनका करुण रस 'पुटपाक' (औषधि पकाने की एक विशेष विधि जिसमें बर्तन के भीतर ही ताप रहता है) के समान है, जो भीतर ही भीतर उन्हें जला रहा है।[9]

आगे बढ़ते हुए श्रीराम उन स्थानों को पहचानते हैं जहाँ सीता ने मृगों को पाला था और पौधों को सींचा था। वे पुरानी स्मृतियों में खो जाते हैं और अपनी वर्तमान एकाकी स्थिति की तुलना अतीत के सुखों से करते हैं। श्रीराम का यह विलाप केवल एक राजा का नहीं, बल्कि एक विरही पति का है जो कर्तव्य की वेदी पर अपने प्रेम की बलि दे चुका है। उनकी स्थिति को स्पष्ट करते हुए कवि कहते हैं:

यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बान्धवो मे,
यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम्।
एतानि तानि बहुनिर्झरकन्दराणि,
गोदावरीपरिसरस्य गिरेस्तटानि॥

यहाँ श्रीराम कहते हैं कि ये वही गोदावरी के तट और पर्वत की कन्दराएँ हैं जहाँ वृक्ष और मृग भी मेरे बान्धव के समान थे और जहाँ मैंने अपनी प्रिया के साथ दीर्घकाल तक निवास किया था। इन दृश्यों को देखकर उनका हृदय विदीर्ण होने लगता है।

निष्कर्षतः, द्वितीय अंक श्रीराम के अंतर्द्वंद्व और उनकी मर्मान्तिक पीड़ा का सजीव चित्रण करता है। एक ओर जहाँ वे राजधर्म का पालन करते हुए शम्बूक का वध करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे एक साधारण मनुष्य की भाँति अपनी पत्नी के विरह में व्याकुल दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष

महाकवि भवभूति द्वारा रचित उत्तररामचरितम् का द्वितीय अंक 'पंचवटी प्रवेश' राम के आंतरिक दुःख और उनके कर्तव्य के द्वंद्व को दर्शाता है।

विष्कम्भक (प्रारम्भिक दृश्य):
अंक की शुरुआत आत्रेयी और वनदेवता वासन्ती के संवाद से होती है। इसके मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:
आत्रेयी बताती हैं कि सीता के त्याग के बाद राम ने अश्वमेध यज्ञ शुरू किया है।
वाल्मीकि आश्रम में लव और कुश का पालन-पोषण हो रहा है।
वाल्मीकि ने रामायण काव्य की रचना की है।
शम्बूक वध और राम का आगमन:
राम दण्डकारण्य में शम्बूक नामक शूद्र तपस्वी का वध करने आते हैं। शम्बूक के अधर्मपूर्ण तप के कारण एक ब्राह्मण बालक की मृत्यु हो गई थी। वध के बाद शम्बूक की आत्मा दिव्य रूप में राम की स्तुति करती है।
पंचवटी की स्मृतियाँ:
शम्बूक वध के बाद राम उसी पंचवटी में प्रवेश करते हैं जहाँ उन्होंने सीता के साथ वनवास का समय बिताया था। यहाँ उनकी विरह वेदना अत्यंत गहरी हो जाती है।
राम की मानसिक दशा (पुटपाक प्रतीकाश):
भवभूति ने राम के दुःख को 'पुटपाक' के समान बताया है।[10]
अनिर्भिन्नोगभीरत्वात्अन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशोरामस्यकरुणोरसः॥
व्याख्या:
जैसे पुटपाक विधि में औषधि बर्तन के भीतर ही पकती है और बाहर आंच नहीं दिखती, वैसे ही राम का दुःख गम्भीर होने के कारण बाहर प्रकट नहीं हो रहा, पर वह उन्हें भीतर ही भीतर जला रहा है।

प्रकृति के साथ जुड़ाव:
राम उन स्थानों को देखते हैं जहाँ सीता ने मृगों को दाना दिया था और पौधों को सींचा था। वे कहते हैं कि यहाँ के वृक्ष और पशु भी उनके भाई-बन्धु के समान हैं।
यत्रद्रुमाअपिमृगाअपिबान्धवोमे...[10]

संदर्भ:

1. हिंदू धर्मग्रंथ। हिंदू धर्मग्रंथ । 5 फरवरी 2019 को प्राप्त किया गया ।
2. भट्ट, सी. पांडुरंगा (1997)। "उत्तररामचरित"। जॉर्ज, के.एम. (संपादक) द्वारा संपादित। भारतीय साहित्य की उत्कृष्ट कृतियाँ । खंड 2। नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट । पृष्ठ 1227-1229 । ISBN 81-237-1978-7.
3. सांकलिया, एचडी, कुंडमाला और उत्तररामचरित। सेंट जेवियर्स कॉलेज पत्रिका: 22: 63 - 76. (1930)
4. झावेरी, मनसुखलाल (1978)। गुजराती साहित्य का इतिहास . नई दिल्ली: साहित्य अकादमी. पी। 104. ओसीएलसी 639128528
5. रामा का अंतिम कार्य, 2019-11-25 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत , पुस्तक का क्ले संस्कृत पुस्तकालय संस्करण (शेल्डन पोलॉक द्वारा अनुवादित)
6. सी.एच. टॉनी द्वारा 1874 में किया गया अनुवाद
7. 1895 संस्करण (न्याय सुधा प्रेस, नागपुर)
8. 1903 संस्करण (निर्णय सागर प्रेस)
9. 1915 संस्करण (हार्वर्ड ओरिएंटल सीरीज 21)
10. बालमनोरमा श्रृंखला